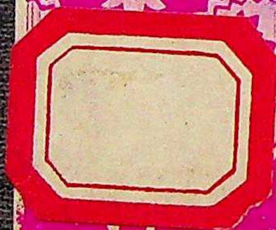




पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है।
इस तिथि सहित १५वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

* श्री *

वक्तव्य.

मेरा कर्त्तव्य है कि अपना वक्तव्य विस्तृत न कर संक्षेपमें समाप्त कर दूं क्योंकि बहुमूल्य समय बातका बतंगड़ बनानेमें बिताना बुद्धिमानीके बिलकुल विपरीत है। इस कारण कहना केवल यही है कि मैंने पञ्जाबके परित्यक्त और पवित्र प्रयागके प्रसिद्ध षष्ठ "हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें" यह अपूर्ण प्रबन्ध पढ़ा था। हिन्दी हितैषी, सहित्यसेवी, सुरसिक, समझदार श्रोताओंने सुनकर इसे सराहा। उन्हींकी प्रेमपूर्ण प्रेरणा और परामर्शसे इसका पूर्व्वार्द्ध ही पुस्तकाकार प्रकाशित करनेका प्रयासी होता हूं। पूर्णाशा है, प्रेमी पाठक भी पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उमापतिकी उपासनासे उत्साहित हो उत्तरार्द्ध भी उपस्थित करनेमें उदासीनता न दिखा उचित उद्योग करूंगा। किमधिकम्।

१०३, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता,
माघ पूर्णिमा, सं० १९७२

मर्म्मज्ञमानसमराल
मिश्र जगन्नाथप्रसाद
चतुर्वेदी।

द्वितीय वक्तव्य.

हर्षका विषय है कि पूर्व्व प्रार्थनानुसार प्रेमी पाठकोंने इसे पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त की और हिन्दी साहित्य सम्मेलनने भी पाठ्य पुस्तकोंमें इसे स्थान प्रदानकर गुण ग्राहकताका गौरव पाया। यह दूसरा संस्करण ही इसका साक्षी है।

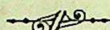
५, मुक्ताराम रो,
कलकत्ता।
बसन्त ५,

सं० १९७५

कृपाकांक्षी
वही
पूर्व्वपरिचित।

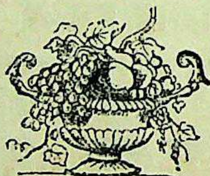
❀ श्रीः ❀

निवेदन.



श्रीमान् सभापति महाशय और सज्जन सभासदो,

प्रबन्ध पाठके पहले यह प्रार्थना परमावश्यक प्रतीत होती है कि इसका नाम "अनुप्रासका अन्वेषण" है और अभी यह अधूरा ही है। यह सर्व्वसाधारणके लिये नहीं सिर्फ साहित्यसेवियोंके सन्तोषके लिये लिपिबद्ध हुआ है। यह कब, कहां, क्यों और कैसे लिखा गया यह सुननेसे ही समझमें आ जायगा। यदि आप लोगोंने पसन्द किया तो इसे पूर्ण करनेका पूरा परिश्रम करूंगा। अन्यथा अधविचमें अपूर्ण ही रहने दूंगा।



* श्री *

अनुप्रासका अन्वेषण.

वर्षों व्यतीत हुए, मेरे आदरणीय अध्यापक श्रीयुत ललित-कुमार वन्द्योपाध्याय विद्यारत्न एम० ए० महाशयने कलकत्ता-कालेज स्क्वायरके युनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूटमें सन्ध्या समय सभा-पतिके स्थानपर सर गुरुदास वनर्जीको विठा "अनुप्रासेर अट्ट-हास" शीर्षक बङ्गला प्रवन्ध पाठ किया था जिसमें उन्होंने बङ्गभाषामें व्यवहृत, प्रयुक्त और प्रचलित संस्कृत, अङ्गरेजी, उर्दू, हिन्दी और बङ्गला शब्द, महावरे और कहावतें उद्धृत कर अनुप्रासका अधिकार बङ्गला भाषापर दिखाया था। प्रबन्ध पढ़े जानेपर बङ्गला वंगवासीके (सम्पादक) वाबू विहारीलाल सरकार बोले कि "बांगलाई कोबीतार भाषा। कारोन एते ओनेक ओनुप्रास आछे। ओतो अनुप्रास आर कोनो भाषाते नाइं। ओनुप्रास कोबीतार ऐकटी गून।" अर्थात् 'बङ्गला ही कविताकी भाषा है क्योंकि इसमें जितना अनुप्रास है उतना और किसी भाषामें नहीं। अनुप्रास कविताका एक गुण है।'

मुझे बूढ़े बिहारी वाबूकी यह बात बहुत बुरी लगी। क्योंकि भारतके भालकी बिन्दी इस हिन्दीको मैं कविताकी भाषा जानता

था क्या अबतक जानता और मानता हूं। मैंने सोचा, क्या हिन्दी भाषामें अनुप्रासका अभाव है? यदि नहीं, तो बङ्गला ही क्यों कविताकी भाषा घोषित की जायगी? यह सोच विचार मैंने हिन्दीमें अनुप्रासका अन्वेषण आरम्भ कर दिया। इस अनुसन्धानमें जो कुछ अपूर्व आविष्कार हुआ वही आज आप लोगोंके आगे अर्पित करता हूं।

संस्कृत साहित्यमें अनुप्रासका अनुसन्धान अनावश्यक जाना क्योंकि एक तो वह भारतकी प्रायः सब ही भाषाओंकी जननी है। उसपर सबकी समान श्रद्धा है। दूसरे उसके स्तोत्रतक जब अनुप्राससे अधिकृत हैं तब काव्योंकी कथा ही क्या है? निदर्शनके लिये निम्नलिखित स्तव ही पर्य्याप्त होगा—

"गांगं वारि मनोहारि मुरारिचरणाच्युतम् ।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥"

"पापापहारि दुरितारि तरंग धारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झंकारकारि हरिपादरजोपहारि
गांगं पुनातु सततं शुभकारिवारि ॥"

एक और सुनिये

"नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगात्
भुजंगास्तुरंगा कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगारि रंगाः ससंगाः शिवांगा
भुजंगाधिपांगी कृतांगा भवन्ति ॥"

हिन्दी साहित्यमें भी मैंने पद्यकी ओर प्रस्थान नहीं किया क्योंकि मैं जानता हूं कि वहां अनुप्रासका अड्डा अद्भुतरूपसे जमा हुआ है। यथा—

चम्पक चमेलिनसों चमनि चमत्कार,
चमू चंचरीकके चितौत चोरे चित हैं।
चांदी को चबूतरा चहूंघां चमचम करे,
चन्दनसों गिरधरदास चरचित हैं।
चारु चांदतारेको चंदोवा चारु चांदनीसो,
चामीकर चोवनपै चंचला चकित हैं।
चुन्निनकी चौकी चढ़ी चन्दमुखी चूड़ामनि,
चाहनसों चैत करें चैनके चरित्र हैं॥

अन्य भाषाभाषी अपनी अपनी भाषाके दो चार शब्दोंमें अनुप्रास आता अवलोकन कर आनन्दित और गद्गद हो जाते हैं। पर यहां तो चारों चरणोंमें चकारकी भरमार है! अफसोस है, तोभी हम हिन्दीकी हिमायत न कर उर्दू अंगरेजीका ही आल्हा अलापते हैं। खैर।

इसलिये मैंने पद्य परित्याग कर गद्यकी ओर ही गमन किया और वहां राजारईस, राजारंक, रावउमराव, सेठसाहूकार, कविकोविद, ज्ञानीध्यानी, योगीयती, साधुसन्यासीसे लेकर नौकरचाकर, [illegible], [illegible], कहार कलवार,

मेहतर चमार, कोरी किसान और लुच्चे लफंगेतककी बातचीत, गपशप, बात विचार, रहनसहन, खानपान, रफतारगुफतार, चालचलन, चालढाल, मेलमुलाकात, रङ्गरूप, आकृति प्रकृति, जानपहचान, हेलमेल, प्रेमप्रीति, आवभाव, जातपांत, रीतरस्म, रस्मरवाज, रीतनीत, पहनावे ओढ़ावे, डीलडौल, ठाठबाट, बोल-चाल, संगसाथ, संगत सोहबतमें अनुप्रासका अमल दखल पाया। मैंने अपनी ओरसे न कुछ घटाया न बढ़ाया, न काटा न छांटा और न चुस्त दुरुस्त ही किया। शब्दोंको जिस सूरत शक्लमें जहां पाया वहांसे वैसेही उठाकर ठौरठिकानेसे मौकामहल देख रख भर दिया है।

अन्वेषणके पहले अनुप्रासका नामधाम, आकार प्रकार, रङ्गढ़ङ्ग और नामोनिशान जान लेना जरूरी है। अङ्गरेजीके Alliteration & Assonance, उर्दू फारसीका काफिया रदीफ और संस्कृत हिन्दीका अनुप्रास नाममें दो होनेपर भी काममें एक ही हैं।

स्वरके विना व्यञ्जन वर्णके साम्यको अनुप्रास कहते हैं। यानी वाक्य और वाक्यांशमें बारंबार एक ही प्रकारके व्यञ्जन वर्णके आनेको अनुप्रास कहते हैं। इसके अनेक रूपरूपान्तर हैं पर प्रधान पांच ही हैं जैसे ;

(१) छेकानुप्रास—भोजन बिना भजन।

(२) वृत्यनुप्रास—हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापतिका सुन्दर सिंहासन।

(३) श्रुत्यनुप्रास—खेलकूद, जङ्गलझाड़ी।

(४) अन्त्यानुप्रास—अत्र तत्र सर्वत्र है, भारतमित्र सुपत्र।

(५) लाटानुप्रास—शिक्षिता अवला अवला नहीं है।

अच्छा अब असली हाल सुनिये। अनुसन्धानके अर्थ कमर कसते ही मुझे अपने इर्दगिर्द, अगलबगल, अड़ोसपड़ोस, टोले मुहल्ले, घरबाहर, भीतरबाहर, आसपास, इधरउधर, नातेरिश्ते, बन्धुबान्धव, भाईबन्द, भाईभतीजे, कुटुमकबीला, पुत्रकलत्र, बालबच्चे, लड़के बाले, जोरूजांते, चूल्हेचक्की, घरबार, अपने-बेगाने, मानभानेज, भाईबिरादरी, खानदान, परिवार तमाम अनुप्रास ही अनुप्रास नजर आने लगा। इसका अनुमान नहीं प्रत्यक्ष प्रमाण लीजिये। मेरा नाम जगन्नाथप्रसाद, स्टेशन जमुई, ससुर जहांगीरपुरनिवासी जौनमाने जसवन्तरायजीके जेठेबेटे जयन्तीप्रसादजी, मामा जयकृष्णलालजी और लड़का यदुनन्दन है। मेरा आदि निवास मथुरा, मध्य मिरजापुर और वर्त्तमान मलयपुर जिला मुंगेर, प्रवास मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (कलकत्ता) अल्ल मईमिश्र, हिस्सेदार मिरजामलजी और चाचा मुरारीलाल तथा मथुराप्रसाद महोदय हैं। उपाधि चौबे चतुर्वेदी, काम चपड़ेका और उमर चालीसकी है। गोत्र सौश्रव है। किस्सा कोताह, परिजन, पुरजन, अरिजन, स्वजन सबकी मोहममता और मायामोह छोड़, मुंह मोड़ सजधज और बनठनकर अनुप्रासकी तलाशमें निकल पड़ा।

वाणिज्य व्यापार.

चूंकि अपना धर्म्मकर्म्म वाणिज्य व्यापारसे चलता है—नौकरीचाकरीसे कुछ लेनादेना नहीं। बस, जवानी दीवानीके फन्देमें फंस मनमानी घरजानी करता पहले वङ्गाल बङ्ककी बड़ाबाजार ब्रेञ्चमें जा पहुंचा तो क्या देखता हूं कि, रोकड़ जाकड़, हिसाब किताब, खाते पत्तर, उचन्तखाते, खर्चखाते, खैरात खाते, खुदरा खर्च खाते, बट्टे खाते, ब्याजबट्टे, लेनदेन, नकराई सकराई, मितीके भुगतान, खोखे, पैठ परपैठ, देनेपावने, नाम जमा, लेवाल देवाल, लेवाल बेचवाल, साझे शराकत, सौदासुल्फ, तारवार, लेने बेचने, खरीद बिक्री, खरीद फरोख्त, बेचनेखोचने, मोल लेने, क्रयविक्रय, मालटाल, मालजाल, माल-मता, बिलटीबीजक, बाकीबकाये, मत्थेपोते, जमीन जायदाद, धनदौलत, धनधान्य, अन्नधन, सौकेसवाये, नफेमुनाफे, नफे-नुकसान, आमदनी रफ्तनी, आगत निर्गत, रूंकधोक, दरदाम, मोलतोल, बोहनीबट्टे, बाजारदर, देनदार, दूकानदार, सर्राफ, बजाज, मुनीम गुमाश्ते और बसनेके ब्राह्मणोंकी कौन कहे दिवाले निकालने, टाट उलटने, बम बोलने, आफीशियल असा-यनी और इनसालवेंट अदालततकमें अनुप्रासका आसन जमा है। केवल यहीं नहीं दल्लाल, नमूने, कामकाज, कारबार, कारब्योहार, कामधन्धे, खुशीके सौदे, कलकारखाने, कलके कुली, जहाजकी जेटी और बट्टेचट्टेमें भी आप आ बैठे हैं।

बाजार बढ़े चढ़े या घटे, गिरे या उठे, तेज हो या मन्दा, सुस्त या समान रहे, मारवाड़ी महाजन हो चाहे बङ्गाली ब्योपारी, ब्योहरे बनिये हों चाहे ब्राह्मण, अनुप्रासके चक्करमें सब ही हैं। उत्तमर्ण अधमर्णमें, स्वदेशी शिल्पमें, सूची शिल्पमें, श्रमशिल्पमें, शिल्पसभामें, श्रमजीवी समवायमें, कृषिशिल्पप्रदर्शिनीमें, वैश्य-वृत्तिमें, व्यवसायात्मिका बुद्धिमें, विज्ञान वाणिज्यमें, अर्थशास्त्र-में, कलाकौशलमें, व्यापारे वसते लक्ष्मी या लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये इस मूलमन्त्रमें भी अनुप्रास आ गया है। अमानतमें खयानत करो, धन गबन करो, चाहे बचत बचाकर नौ नकद न तेरह उधार करो, कच्चे चिट्ठेको पक्का समझो या सफेदको स्याह करो, बङ्कसे बन्धकका बन्दोवस्त कर ब्याज बढ़ाओ, जूट पाटका फाटका या सट्टा करो पर अनुप्रासका अदर्शन न होगा।

हमारे लाखके लेनेवाले रेलीब्रदर्स, अर्नथौजन, बेकरग्रे, टौमसनलेजन और लालमारसलपर तथा बेचनेवाले मिरजापुरी महाजन गरीब फकीर, बन्धू बुझावन, मङ्गन झङ्गन, शिवचरन-सहाई, झब्बूलाल, चुन्नीलाल लूनावत और रामस्वरूपराम रामसकलरामपर भी अनुप्रासका अनुग्रह है। यह दूकानदारी या बनावटी बात नहीं, सच्चा सौदा है।

अग्रसर हुआ तो कलकत्तेके बड़े बाजारमें, दिल्लीके चांदनी चौकमें, बनारसके ठठेरी बाजारमें, आगरेके किनारीबाजारमें, मिरजापुरके धून्धीकटरेमें, कानपुरके कलकटरगञ्जमें, जयपुरके

जौहरीबाजारमें, प्रयागके जानसेनगञ्जमें, मुंगेरके बेलनबाजारमें, भागलपुरके नाथनगर, सूजागञ्जमें, मैनपुरीके मदार दरवाजेमें, पटनेके खुचकल्लेमें, बम्बईके कालवा देवीमें भी अनुप्रासको अकड़ते पाया। अस्तु।

साहित्य.

अर्ज्जन उपार्ज्जनके उपरान्त साहित्यसेवा है। संस्कृत साहित्यकी कौन कहे, राष्ट्र भाषा हिन्दीके साहित्यसंसारमें भी अनुप्रासकी आंधी आ गयी है। दिव्यदृष्टिसे नहीं चर्म्मचक्षुओंसे ही चश्मा लगा आप देखेंगे कि, कविकुलकुमुदकलाधर, काव्य-काननकेसरी और कविताकुञ्जकोकिल कालिदास भी काव्य-कल्पनामें अनुप्रासका आवाहन करते हैं। कहीं कहीं तो कष्ट-कल्पनासे काव्यका कलेवर कलुषित हो जाता है। यह कपोल-कल्पना नहीं कवि कोविदोंका कहना है। खैर, वंशीवट, यमुना निकट, मोर मुकुट, पीतपट, कालिन्दीकूल, राधामाधव, व्रज-वनिता, ललिता, विधुवदनी, कुंवर कन्हैया, नन्द यशोदा, वसुदेव देवकी, वृन्दावन, गिरिगोवर्द्धन, ग्वालबाल, गो गोप गोपी, तालतमाल, रसाल साल, लवंगलता, विपिनविहारी, नन्दनन्दन, विरहव्यथा, वियोगव्यथा, संयोग वियोग, मधुर मिलन, मदन-महोत्सव और मलयानिल ही नहीं झिल्लियोंकी झंकार, चीर बादर, घनगर्ज्जन वर्षण, दामिनीकी दमक, चपलाकी चमक, बादरकी गरज, शीतल सुगन्ध मन्द मारुत, कुसुमकलिका,

महावर, सोलहश्रृङ्गार, मृगमद, राहुरद, कुमुद कमलकल्हार, स्थलकमल, सरसिज, सरोरुह, पद्मपत्र, एलालता, लज्जावती लता, छुईमुईकी पत्ती, कोयलकी कुहक, कूजितकुञ्जकुटीर, शशि, वायु, मलयमारुत, मधुमास, स्मरशर, पवित्र प्रेम, प्रेमपाश, प्रेमपिपासा, यामिनीयापन, ... रत्न, सुखसागर, रससागर, दुःखदावानल, अन्धअनुराग, मुग्धा- ... अथवा विधवा सधवा, चित्तचोर, ... प्राण..., ...प...थ..., प्रेमपत्र, प्रेम...ताक..., प्राण... ...स्वप्न, ... न, चूमाचाटी, पादपद्म, क...म कोप, ...टी- ... अनुप्रासरे अ... ...ग्रीव, बाहुवल्ली, करकमल, पद्मप...ाशल ... ...कलश, कु... ...विडंनितम्ब, पदपल्लव ... नयन, ...क..., ... कपोल, गु...बी गाल, द... ... और ... ...श... ...ोरा ... ... है वैसे ... ...ी ... नाटी ... ... के दिर... बालोंमें ... ... सरास ... ... पन्थ ही पृ... ... ...र भी ...ता है। ... ...ख और ... ...फँसा। इश्क ...की हो या मजाजी ... मा...ी देवी, ... दोनों हैं। भ...तके वसमें हैं भगवान।

औ

होना ज

...ाष आफत विपत होते

...ाकसूदको पहुंच जाता है। ...

...पद्व ...छ है ही नहीं। यहांतक

अब अ...ी राम मालिक है।

व्याकरणके वर्त्तमानभूतभविष्यतमें, संज्ञासर्व्वनाममें, विशेष्य विशेषणमें, सन्धिसमासमें, कर्त्ताक्रियाकारकमें, कर्त्ताकर्म्म-करणमें, उपादानसम्प्रदानअधिकरणमें, सम्बन्धसम्बोधनमें, उद्देश्य विधेयमें, कर्त्तरिकर्म्मणि प्रयोगोंमें, तत्पुरुष कर्म्मधारय बहुव्रीहि द्वन्द द्विगु समासोंमें, विभक्तिप्रत्ययमें, प्रकृतिप्रत्ययमें, आसक्ति-आकांक्षामें, सार्थक निरर्थक शब्दोंमें, जातिव्यक्ति और भाववाचक संज्ञाओंमें जब अनुप्रासका निवास है तब सामयिक साहित्यकी सामग्री कागजकलम, कलमपेनसिल, रूलपेनसिल, हेन्डल होल-डर, स्याही सोख, निब पिन, चाकूकैंची, एडीटर कम्पोजिटर, प्रिनटर पबलिशर, सम्पादक मुद्रक प्रकाशक, प्राप्तपत्र, प्रेरितपत्र, सम्पादकीय स्तम्भ, साहित्यसमाचार, तार समाचार, तड़ित समाचार, तार तरङ्ग, विविध समाचार, मुफस्सिलसमाचार, साहित्य समालोचना, क्रोड़पत्र, वेल्युपेबल, पारसल और प्रेस सेनसरमें भी अवश्य ही है।

भारतमित्र, अभ्युदय, प्रेमपुष्प, वंगवासी, प्रताप, जयाजीप्रताप, सज्जनकीर्त्तिसुधाकर, वीरभारत, पाटलिपुत्र, विहारबन्धु, मिथिला-मिहिर, सत्यसमाचार, सत्यसनातन, चित्रमयजगत्, सद्धर्म्म-प्रचारक, अवधवासी, आनन्द, वेंकटेश्वर समाचार, दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रोंमें और सरस्वती, मर्य्यादा, नवनीत, जासूस, नव-जीवन, सारदाविनोद, स्त्रीदर्पण, मनोरञ्जन, वैष्णवसर्वस्व, सुधा-निधि, चतुर्वेदी चन्द्रिका, महामण्डल मेगजीन, ब्रह्मचारी, ललिता नामक मासिक पत्रोंमें अनुप्रासका अंश है।

लेखकोंमें बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, गंगाप्रसाद गुप्त, लाला भगवानदीन, व्रजराज बहादुर बी० ए०, नरेन्द्रनारायण, भास्कर भालेराव, हरिहरस्वरूप शास्त्री, तीर्थत्रय सकलनारायण शर्म्मा, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, वासुदेव, बाबूराव विष्णु पराड़कर, यशोदानन्दन अखौरी, रामनारायण चतुर्वेदी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, विद्यावारिधि, (ज्वालाप्रसाद मिश्र), नन्दकुमारदेव शर्म्मा, गिरिजाकुमार घोष, चन्द्रधर गुलेरी, कृष्णकान्त, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, गोपालराम गहमरी, रामजी लाल, लज्जाराम, रुद्रदत्त, गौरीशङ्कर हीराचन्द, राधाचरण, द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी, रामावतार, रामरणविजयसिंह, अयोध्या-सिंह उपाध्याय, देवकीनन्दन, राय देवीप्रसाद पूर्ण, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अम्बिकादत्त व्यास, माधव मिश्र, श्रीनिवासदास, सदानन्द मिश्र, तोताराम, लल्लूलाल और लेखिकाओंमें यशोदा देवी, राजमन्नी देवी, कृष्णकला, कृष्णकुमारी, तोरन देवी लली,

रामेश्वरी नेहरू और हेमन्तकुमारी चौधरी अनुप्रासके अन्तर्गत ही मिलीं।

द्विवेदीजी कृत 'कालिदासकी निरंकुशता', मनसाराम लिखित 'निरंकुशता निदर्शन', आत्माराम रचित 'अनस्थिरता', मौजीराम-का 'विचार वैचित्रय', शिवशम्भु शर्म्माके चिट्ठे, मस्तरामके मन्तव्य, मनसुखाका मनसूबा, गिटपिटानन्द, गोलमालकारी, कलकत्तेकी साहित्यसंवर्द्धिनी सभा, प्रयाग या फीरोजाबादका भारती भवन, पाठकजीका पद्मकोट, सिंहजीका 'सतसई संहार', व्यासजीका 'विहारी विहार', प्रतापनारायणजीका 'सांगीत शाकुन्तल', श्याम+शुक+गणेश विहारी मिश्रोंका 'वन्धुविनोद', या 'कविकीर्त्तन' तथा 'नवरत्न', मैथिलीशरणकी 'भारत भारती', अयोध्यासिंहजीका 'प्रिय प्रवास' तथा 'ठेठ हिन्दीका ठाठ', अयोध्यानरेशका 'रसकुसुमाकर', जोधपुरी मुरारिदानजीका 'यशवन्त यशोभूषण' और मेरा 'संसारचक्र' तथा 'विचित्र विचरण' भी अनुप्रास आमेज है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति होनेके सबब ही मान-नीय मदनमोहन मालवीय, गोविन्दनारायण मिश्र, वदरीनारायण चौधरी, महात्मा मुनशीराम और पंडित श्रीधर पाठक तथा महा-मन्त्री पुरुषोत्तमदास टनडनको भी अनुप्रासने अछूता न छोड़ा।

अनुप्रासके अत्यन्त आग्रहसे ही बाबू श्यामसुन्दर दास इस बार सभापतिके आसनपर आसीन हुए। पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा स्वागतकारिणी समितिके मन्त्रिपदको त्याग जड़ीबूटी जमा करने

हिमशैल शिखरपर सिधारे और पं० राजाराम शास्त्री उक्त पदपर पधारे थे। अनुप्रासके अनुरोधसे ही राय रामशरणदास बहादुरने भी स्वागतकारिणी समितिका अध्यक्ष होना अङ्गीकार किया और मनहूस मुहर्रमकी तङ्ग तातील तजकर क्रिसमसका सुहावना समय स्थिर हुआ। लोगोंको लखनऊसे ही लाहोर चलनेकी लालसा लगभग साल भरसे लगी हुई थी पर दानापानीने सवपर पानी फेर दिया। अन्नजल बड़ा प्रबल है। पगगड़वाज पञ्जावियोंकी परिवर्त्तनप्रियता अथवा लहरी लाहौरियोंकी लवड़धोंधोंसे हमारे तुम्हारे सबके छक्के छूट गये। हक्के बक्के हो इधर उधर ताक झांक करने लगे। घिग्घी बंध गयी, बोल बन्द हुए। पर स्थायी समिति स्थिर रही। किंकर्त्तव्यविमूढ़ न हो उसने सोचा समझा और अलाहाबादमें ही अधिवेशनका आयोजन कर एक सख्त सवाल या मुफीद मसला हल कर डाला। लिहाजा लाचार हो लाहोरकी लम्बी मुसाफरीसे मुंह मोड़ अनुप्रासके अनुसन्धानमें मैं भी पञ्जाब मेलसे पटने होता प्रयाग पहुंच ही गया।

धर्म्म.

साहित्य सेवाके बाद धर्म्म कर्म्म है। धर्म्मान्ध, धर्म्मधुरन्धर, धर्म्मधुरीण, धर्म्मावतार और सनातनधर्म्मावलम्बी बन कर पोथीपुराण, श्रुतिस्मृति, शास्त्रपुराणका पठन-पाठन और श्रवण मनन निदिध्यासन करो, प्रतिमापूजन प्रतिपादन, मूर्त्ति-

पूजामण्डन और श्राद्ध तर्पणका शङ्का-समाधान करो ; पाखण्डी पंडों, पुरोहितों और पण्डितोंके पैर पूजो, लकीरके फकीर बनो, संयमनियम, तीर्थ व्रत, योगभोग, जपतप, यागयज्ञ, ज्ञानध्यान, स्नानध्यान, पूजापाठ कर कर्म्मकाण्डी कहाओ, हव्य कव्य गव्य, पञ्चामृतपञ्चगव्य, धूपदीप, चन्दन, पुष्प, कुमकुम, गङ्गाजल, तुलसीदल और ताम्बूल पूंगीफलसे परमात्माका पूजन अर्चन करो, चाहे आर्य्यसमाजी हो बालविवाह, विधवा विवाह, बहु-विवाह, वृद्ध विवाह, बेमेल ब्याहका विरोध कर समाज संस्कार, समाज सुधारके साथ नियोग निरूपण करो या खण्डनमण्डन, शास्त्रार्थ, सन्ध्यावन्दन, होमहवन कर मांसपार्टी, घासपार्टी पैदा करो पर अनुप्रास सदा सर्वत्र अनुसरण करता है। केवल यहीं नहीं ; प्रवृत्ति निवृत्ति, स्वर्ग नरक, पापपुण्य, अर्थ धर्म्म काम मोक्ष, मुक्ति मोक्ष, लोक परलोक, यमयातना, साकार निराकार, निर्गुण सगुण, काशीकरवट, दान पुण्य, जन्म मरण, जन्ममृत्यु, विषयवासना, ब्रह्मविद्या, मुक्तिमार्ग, ज्ञान नेत्र, आगम निगम, वेद उपनिषद, वेद वेदाङ्ग वेदान्त, ब्रह्मवैवर्त्त, श्रीमद्भगवद्गीता, शास्त्रसिद्ध विधि निषेध और वेदविहित कर्म्मों में भी अनुप्रासका आदर देखा।

आचारविचार, नेमधरम, नित्यनैमित्तिक क्रिया कर्म्म, ध्यान-धारणा, स्तवस्तोत्र, यन्त्रमन्त्रतन्त्र, ऋद्धिसिद्धि, शुभलाभ, भजनपूजन, भगवच्चिन्तन, प्रायश्चित्त पुरश्चरण, वृद्धिश्राद्ध, आद्य-श्राद्ध, सपिण्डणश्राद्ध, पितृप्रेतकृत्य, पिण्डप्रदान, कपालक्रिया,

जलाञ्जलि, तिलाञ्जलि, पितृपक्ष और गोग्रासमें भी अनुप्रासका अनुभव किया।

दरसपरस मज्जन पान करो, सत्सङ्ग या साधुसमागमसे दुस्पारासार संसारको अनित्य समझो, या सांसारिक सुखसम्भोगमें सारा समय समर्पित कर दो, मारवाड़ी सहायक समिति संस्थापित करें या श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय वनवावें पर वह अनुप्राससे अलग नहीं हो सकते। झुनझुनूवालेका लछमन झूला, रामचन्द्र गोइनकाका जनाना घाट, सोदपुरकी पिंजरापोल, राय वहादुर वदरीदास मुकीमका माणिकतल्लेवाला मन्दिर, मिरजापुरकी गोवर्द्धनगोशाला, सहारनपुरका (मेरी) सारदासदन, कांगड़ीका गुरुकुल, हिन्दीहीन हिन्दू विश्वविद्यालय, वावा ज्ञानानन्दका शरीर और निगमागम मण्डली, व्याख्यानवाचस्पति महामन्त्री दीनदयालुजीका श्रीभारतधर्म्म महामण्डल, प्रयागकी सेवासमिति और थूकापन्थी भी अनुप्रासके आश्रित ही हैं।

हिन्दुओंके परब्रह्म परमात्मा, ब्रह्मा विष्णु शिव, वरुण कुबेर, जय विजय नामक दोनों द्वारपाल, सूर्य्यचन्द्र, ग्रहनक्षत्र, काली कमला शीतला, सरस्वती, महामाया, इन्द्राणी, शर्वाणी, रुद्राणी, कल्याणी, देवदानवों, देवीदेवताओं, नरीकिन्नरी अप्सराओं, गन्धर्व्वों और भूतप्रेत पिशाचोंमें ही नहीं मुसलमानोंके पाकपरवरदिगार अकबर, हजरत मुहम्मद, पीर पैगम्बर, मांमपीर, हसन हुसैन, मक्के मदीने,

कलामअल्लाह, जामामसजिद, मोती मसजिद, मीना मसजिद, रोजारमजान, अलहम दुलिल्लाह, शीया सुन्नीमें ; ईसाइयोंके ईसामसीह, बाइबल, मरियम, देवदूत, प्रभातपार्थ नामें तथा बौद्धोंके बुद्धदेव, शाक्यसिंह, पद्मपाणि, प्रज्ञापारमिता, बौद्ध-विहार, दलाईलामामें, सिखोंके नानक और गुरुगोविन्दमें, जैनियोंके पार्श्वनाथ पहाड़में, आर्य्यसमाजियोंके स्वामी दयानन्द सरस्वती और सत्यार्थप्रकाशमें, ब्रह्मसमाजियोंके राजाराममोहन-रायमें और वैष्णवोंके वल्लभाचार्य्यमें भी अनुप्रास है।

कुम्भ मेलेपर ओ० आर० आर० से हरद्वार जा हरकी पैरीके पुलके पास जगज्जननी जान्हवीके शीतल जलसे पाप ताप, त्रय-ताप प्रक्षालन करो, त्रिवेणीके तटपर माघमेलेमें मुण्डन करा मकर नहाओ, सूर्य्यग्रहणके समय कुरुक्षेत्रमें या मलमासमें राजगिर जा स्नानदान करो, संक्रान्तिके समय सागरसंगम या गङ्गासागरका सफर करो, कार्त्तिककी पूर्णिमापर हरिहरक्षेत्र जाकर गण्डकीमें गोते लगाओ, बनारसके विश्वनाथजी और वैजनाथजीमें वं वं बोलो, या काशीके कङ्कर शिवशङ्कर समान जानो, कोटकांगड़ेको नयनादेवीके दर्शन करो या मन चङ्गा तो कठौतीमें गङ्गाके अनुसार शिक्षा दीक्षा ले घरपर ही अतिथि अभ्यागतों, साधु संन्यासियोंकी सेवा कर मेवा पाओ, चाहे व्यसनी व्यभिचारी विहारी विलासी बाबू बनकर विषयवासनाके वशीभूत हो बागबगीचेकी बारहदरीमें चुपचाप संगीसाथियोंके साथ मिलजुल आमोद प्रमोद,

ऐशोइशरत, ऐशोनिशात करो, शराब कबाब और मांस मछलियां उड़ाओ, होटलोंमें बोतलोंके बिलोंका टोटल दे बंकपर चेक काटो या भाटभिखारियों, दीनदुखियों और लूलेलंगड़ोंको कानी कौड़ी न दे महफिलमें मुजरा सुन रंडीभंडवे और भांड़ भगतिनोंको इनाम एकराम दे सब स्वाहा कर डालो या शिखासूत्र परित्याग परमहंस बनों या वल्लभकुलियोंको "तन मन धन अर्पन" कर समर्पण ले लो पर अनुप्रास सदा साथ रहेगा।

धर्म्मकी गहन गति मनके अनुकूल न हो तो समाज संशोधनकी ही ठहरे। पहले समाजशरीरका स्वरूप स्थिर करो; विवाह बन्धन, जातपांत, छूआछूत, चुल्हेचौके, पञ्चपरमेश्वर और खानपानका ध्यान छोड़ एकामेक गड्डमगड्ड हो पुरुषोत्तमपुरीकी प्रथा प्रचलित करो या दादूदयाल और सुन्दरदासकी सच्ची सलाह सुन वाममार्गसे मुंह मोड़ो या पतित जातियोंको शुद्ध कर पटेल बिलके प्रचारक हो नया नाता जोड़ो या स्त्रियोंको शिक्षा और स्वतन्त्रता दे उनके शुभचिन्तक बनो या उन्हें निपट निरक्षर और निपढ़ बना परदेके पीछे रख कूपमंडूक बनाओ पर अनुप्रास पास ही रहेगा।

आश्रम.

ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चार आश्रम हैं। इस कराल कलिकालमें ब्रह्मचर्य्यकी व्याख्या वृथा है। नामके ब्रह्मचारी बहुत पर कामके कम हैं। वानप्रस्थ विदा हो चुका है। संन्यासका स्वरूप है पर शीलस्वभाव नहीं। हां, गृहस्था-

श्रमका गौरव ग्वालोंकी कौन कहे, गोस्वामियोंतकमें है। इसलिये अब मैं गृहस्थके घरमें ही घुसकर अनुप्रासकी तलाश करता हूं क्योंकि धर्म्मकी चर्चा करना लोहेके चने चबाने हैं।

गृहस्थाश्रम.

गृहस्थाश्रममें गमन करते ही विवाह—पाणिग्रहणकी चिन्ता चित्तको चञ्चल करती है। घरनीके बिना घर नहीं—गृहिणीके बिना गृह नहीं। स्वजनों, परिजनों, पुरजनोंसे नीची नजर न करो तो बनी बात बिगड़ती है क्योंकि कारबार, कारकर्द्धका सङ्गसाथ ठहरा। शहर, बाजार और नगरकी ही नहीं गँवई गांव और दिहातोंकी भी यही दशा है। दादा दादी, माता-पिता, चाचा चाची, काका काकी, भाई भौजाई, भाई भतीजे, जीजा जीजी, फूफा फूफी, नाना नानी, मामा मामी और बहन बहनोईकी बदौलत सम्बन्ध—सगार्त्त—सगाई हो गयी। वैदिक लौकिक रीतभांत होने लगी। गाने बजाने, नाचगान, रागरङ्गका बाजार गर्म हुआ। चहलपहल हुई। सजधज, बाजेगाजे, ठाटबाठ, धूमधाम, धूमधड़क्के, तुमतराक और शानशौकतसे ठस्सेके साथ बनरेने सिरपर सेहरा रख घरसे घोड़ी या पीनस पालकी, तामजाम या विहारकी खड़खड़िया पर शुभसायतमें यात्रा की। अपने बेगाने, अपने पराये बराती बने। खाते पीते, उठते बैठते, सोते जागते पैदल चलते ठीक ठिकाने पहुंचे। यह उस समयकी बात है जब रेलका जाल नहीं फैला था। अब

ती स्टेशन जा, टिकट कटा, माल तुला, महसूल दे दिवा पलाट-फौर्मपर टहलने लगे। पहलेसे डब्बे रिजर्व करा लो तो कोई झंझट नहीं। सिगनेलने सिर झुकाया। गाड़ी आयी। चढ़ बैठे। नहीं तो भीड़भाड़में धक्कमधक्के, ठेलमठेले, ठायंठायं, चख चख, ले ले, दे दे, तू तू, मैं मैं, हायहाय ही नहीं, लप्पड़ थप्पड़ धौलधप्पे, चपत तमाचे, चांटे चटकने चनकटे, मुक्के, लात जूते, जूतीपैजार, मारपीट तककी नौबत पहुंच जाती है। पर तोभी गाड़ीमें गुजर नहीं। घंटा बजते सीटी हुई और गाड़ी यह गयी वह गयी। कुलियोंकी कामना पूरी करनेमें कोताही की और हुज्जत हुई। इससे स्टेशनमास्टरसे ले मेहतरतकका मुंह मीठा करना मुसाफिरोंके लिये मुफीद है। तीसरे दरजेके मुसा-फिरोंसे ही रेलवेवालोंका रोजी रुजगार, रोजीरोटी चलती है और घर भरता है पर तोभी उनके सुख दुखका पूछनेवाला कोई नहीं और न कोई उनकी खोज खबर ही लेता है। सच-मुच उनका धनीधोरी कोई नहीं है। गर्मीके मौसममें पथिक पिपासासे पीड़ित हो पुकारते पुकारते पसीने पसीने हो जाते हैं पर पानीपांडेजी (चाहे वह कोरी कलवार ही क्यों न हों) टससे मस नहीं होते। कृपा कर आये भी तो डोल, बालटी, लोटा खाली दिखा रफूचक्कर हो जाते हैं। मुसलमानोंके सक्के या बिहिश्ती सुराही गिलास लिये पहले गोरे गार्ड ड्राइवरोंके ढिंग जाते। पीछे मकरूह मुसाफिरोंका मुआइना करते हैं। यही नहीं, गाडियां लड गयीं या आपसमें उनकी टक्कर हो

गयी तो जानकी जोखिम है। प्राणपखेरूके उड़नेमें विलम्ब नहीं होता।

अच्छा अब आगेका हाल अहवाल सुनिये। बरातके डेरा डालते ही बेटीके बापपर बेभाव पड़ने लगती है। वह बेचारा बराती घराती, आये गये, पई पाहुने, न्योतहारी व्योहारी, दोस्त आशना, गुरु पुरोहित, सगे सम्बन्धीके आवभाव, आदर सत्कार, खिलाने पिलाने सुलानेके प्रबन्धमें ही पग जाता है। गरजने चिल्लाने, बकने भूकने, समझाने बुझाने और गुलगपाड़ेसे तबीयत हैरान परेशान रहती है। सुबह शाम, सांझ सबेरे जब देखो तब वही बात। अकेलेकी आफत है। जो धन जनसे भरा पूरा है उसकी कुछ मत पूछो। भागवानका हल भूत जोतता है। गरीबोंको भगवानका ही भरोसा है। उनका बेड़ा वही पार करता है। इस लिये हिम्मत हारने या मन मारनेकी जरूरत नहीं। पर औरतें गीत गाने, गाली गाने, सीठने सुनाने, सिङ्गारपटार करने और चोटीपाटी, मेंहदी महावर, मिस्सी सुरमेंमें ही मस्त रहती हैं। उन्हें फालतू बातोंसे क्या मतलब? खैर, शुभ समयमें कन्यादान हुआ। मातृका पूजन, शाखोच्चार, सप्तपदी, पादप्रक्षालन, मधुपर्क, सिन्दूरदान आदि शास्त्रोक्त रीतियां यथासमय की गयीं।

मांगरमंडवे, तेलताई, कुंवरकलेवे, बत्तीमिलाई, गूंथखुलाई, पत्तलबदलौअल, टीकापटा, पांवपखरावनी आदि क्रियाचारोंमें कुछ कोरकसर या गलती भूल नहीं रही। यहांतक कि गोबरगणेशकी

पूजा भी पहले ही विधिवत् कर दी गयी थी। वर वधूको बधाइयां और मुबारकबाद मिला। दोनों ओर वारे न्यारे हुए। खर्चबर्च हैसियतके हिसाबसे करना ही होशियारोंका वसूल है। नहीं तो व्याह बाद पत्तर भारी हो जाती है। 34252

इसके बाद जेमाजूठी, ज्योनार भोज, भोजन-छाजनकी बारी आयी। आहारेव्यौहारे लज्जा न कारे। लाचार निर्लज्ज हो न्योता खाने लोग चले आये। पहले पानीपत्तर, जलपत्तल, परीसनेकी पुरानी प्रथा है। अब साथमें लोटा गिलास लानेकी चाल चल बसी है। इस लिये किसोरों, सकोरों, पुरवोंका प्रबन्ध हो जाता है। कच्चीपक्की, निखरेसखरे, आमिष निरामिषका विचार बेहद बढ़ गया है। घृतपक्क पयोपक्कके भी प्रेमी हैं। पर कानकुब्जोंकी कहानी अकथ है। वह तीन जने इकट्ठे हो तेरह चूल्हे चाहते हैं। बेटी रोटी व्यौहारका वहां बड़ा बखेड़ा है। पर हम चौबे चतुर्वेदियोंकी चाल निराली है। इनकी मथुरा ही न्यारी है। यहां भेदभाव नहीं। सब साथ खाने पीनेवाले हैं। हां, लकीरके फकीर जरूर हैं। लीक लगाये विना इनका काम नहीं चलता है। यथास्थान सबके आसीन हो जानेपर परीसनेवालोंने पाकप्रणालीके अनुसार परिवेषण प्रारम्भ किया। मैं भी सागसब्जी और सागतरकारीसे ही शुरू करता हूं। लीजिये—

रसीला मठीला आलू, आलू परवल पालक, कोंहड़ा कदुआ करैला केला करमकल्ला कच्चू, तुरई मुरई, मूली मटर, पपीता, रामतरोई, नेनवां गोबी गाजर अरवी, करैलेकी कलौंजी, कच-

नारकी कलियोंका रायता, आलू और आमका अचार, अचार चटनी, चटपटी चटनी, आम आमलेका मुरब्बा, जलजीरा। कान-कुब्जोंकी कढ़ी करायल, पपची पान।

कची.

चावल दाल, रोटी पूरी, खीर शोर, खीरपूरी, खीरमहेरी, निमेना, खिचड़ीके चारों यार—घी दही पापड़ अचार, बरी तिलौरी फुलौरी पकौरी, तरींबरीं, रसखीर, दालफलका।

पक्की.

पूरी कचौरी, पूरी परामठा, पूरी तरकारी, दिलखुशहाल सुहाल, रबड़ी बसौंधी, लड्डू पेड़ा, मोहनभोग मालपूआ, सोहन-हलुआ, समोसा, बुंदियादाना, परवललत्ती, गुपचुप, बादामकी बर्फी, कलाकन्द, खाजा खुरमा, गुलगुला, बड़ा पापड़, मटरकी छीमी, बालाई मलाई, इमरिती इन्दरसा, गुलाबजामन जलेबी, गुटेटा, उलटा चीला, मोतीचूर मगदल, मेवामिटाई, दूध दही, मक्खन मिसरी, नवनीत, मिष्टान्न, पक्वान, शाकान्न, चव्य चोष्य, लेह्य पेय पदार्थोंके सिवा मीठेसीठे, खट्टे चरपरे, कड़वेकसैले, तीते, सारांश यह कि षटरसकी स्वादिष्ट सामग्री संगृहीत थी।

फल.

फलाहारियोंके लिये फलमूल, सेब नासपाती, अंगूर अनार, अंजीर अखरोट, अमरूद अनन्नास, आम जामन, केले नारियल, शहतूत, खिन्नी, आमइमली, नीबूनारङ्गी, कटहल बड़हल, कमरख कमलगट्टे, सीताफल शरीफे, श्रीफल बेल, चिरौंजी, किसमिस

पिस्ते, मुनक्के, बादाम बिहीदाने, खीरे ककरी, तरबूज और खरबूजे भी खरीदे गये थे।

मुसलमानोंके लिये बावर्चियोंके बनाये कलिया कवाब, कलिया पुलाव, कोफता कोर्म्मा, शीरमाल जरदा बिरियानी, केक बिसकिट, चा चीनी, मुर्गमुतंजन वगैरह खाने अलग दस्तरखानपर चुने गये थे।

जिसे जुरता नहीं वह बेचारा बापुरा गरीब दालदलिया, सागसत्तू, चनाचबेना, रूखासूखा, मोटाझोंटा, मोटा महीन, पत्र पुष्प लेकर ही समधीका सत्कार करता है।

खानाखाने, भोजनकरने, भक्षणकरने, भकोसने और भखनेपर हाथमुंह धो, कुल्ला कर, खरके-तिनकेसे दांत खोद कोई पानसुपारी, लौंग लायची, सुरती जरदा तम्बाकू खाता है और कोई चिलम तमाकू, टिकिया तमाकू, हुक्का गड़गड़ा, चुरुट बीड़ी सिगरेट पीता है। नये शौकीन ताम्बूलविहार और जीनतानपर टूटते हैं। मतलब यह कि बन्दोवस्त बड़ा बढ़िया था। जिसने जो मांगा, वही मिला।

इसके बाद बरात बिदा हुई। बरतन बासन, बासनकूसन, असनबसन, जामाजोड़ा, लहंगालुगरा, ओढ़नाबिछौना, तोशक तकिया, गहनागुरिया, गहनागांठी, रुपयेपैसे, जहेज, दानदहेज दमादको दस्तूरसे ज्यादा दिये गये थे। नगदनारायणमें भी न्यूनता न थी। जिन लोगोंमें लेनदेनकी—ठहरौनीकी रीत है उनमें बड़ा झगड़ाझंटा, झगड़ा बखेड़ा होता है पर यहां चींचपड़,

गड़बड़शड़बड़के बिना हंसीखुशी मामला मिटा। विदाके वक्त स्त्रियोंका मिलनाजुलना, मिलना भेंटना, लिपटना रोनाधोना देखकर पत्थर भी पसीजता था। जनाब, बेटीकी बिदा है या दिल्लगी ? दुष्यन्तके दरबारमें शकुन्तलाको भेजते समय कानन-वासी कठोर कण्वका भी कलेजा कांप गया था। यह हमारा तुम्हारा नहीं कवियोंके कुलगुरु कालिदासका कथन है। खैर, बहूकी बिदा ले बरात बस्तीके बाहर हुई। गौनेरौनेकी रस्म भी पूरी कर दी गयी। जैसे गयी थी वैसे ही कुशल मङ्गल बरात घर वापिस आयी। बहूके निरीछन परीछन हो जानेके बाद बेटेबहू या वरवधुका गृहप्रवेश हुआ। पांवपड़ाई और मुंहदिखाई हुई। सास ससुर, देवरानी जिठानी, नन्दनन्दोईसे नया नेह नाता लगा। ससुरालमें साली सलहज, सालासाली और साढ़ूका सम्बन्ध स्वयंसिद्ध हो जाता है।

यहांतक तो अनुप्रासके अन्वेषणमें कृतकार्य्य हुआ। आगे कौन कह सकता है कि क्या होगा। पर मैं पीछे पैर देनेवाला नहीं। धैर्य्य धारण कर दिन दूने रात चौगुने साहस और उत्साहसे हाटबाट, घरघाट, नदीनाले, जङ्गल झाड़ी, बन पर्व्वतकी कौन कहे देश विदेश और सात समुद्र पार जाकर द्वीपद्वीपान्तरोंमें दिनदोपहर, दिनदहाड़े, रातबिरात बेरोकटोक विचरण करूंगा और मौका मिलते ही अनुप्रासकी खुश-खबरी, शुभसमाचार सबको सुनाऊंगा। अभी तो गृहस्थाश्रम ग्रहण कर दारपरिग्रह ही हुआ है। उसके सुखसम्भोग, सुख-

शान्ति, सन्तानसुख, रागरंग और दुःखदारिद्र, शोकसन्ताप, कलह क्लेश, हर्षविषाद तथा जञ्जालका जिक्र ही नहीं आया है। गृहस्थको सब ही भोग भोगने पड़ते हैं। यह देहका दण्ड है। लीलामयकी लीला अपरम्पार है। वह तिलको ताड़ और पर्व्वतको राई कर सकता है। भूतनाथ भगवान भवानीपति अलबेले भोलानाथका ही भारी भरोसा है कि वह भलीभांति भला करेंगे।



परिशिष्ट

अनुप्रास-अन्वेषणपर कुछ चुनी हुई

सम्मतियां।

पञ्चम हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति *सुकवि श्रीमान् पं० श्रीधर पाठक* लिखते हैं :—

"आपका अनुप्रास-अन्वेषण अवलोकनकर अपने रामको अमित आनन्द अनुभव हुआ। उसके अर्थ अनेकोंवार अह्लाद-वाद आयोजित है। आपकी अप्रयास अनुप्रास-आचार्य्यतामें अप्रतिम प्रतिभाका आभास और अतुल आमोदका आवास है।"

इतिहास वेत्ता जोधपुर निवासी *श्रीयुत मुनशी देवीप्रसादजी* लिखते हैं—

"यह पुस्तक विद्वद्वर पंडित जगन्नाथ प्रसादजी चतुर्वेदीकी बनायी है। इसका विषय जो अनुप्रासका अन्वेषण है नामसे ही जाना जाता है जो स्वयं अनुप्रासमय है।

पंडितजीने हिन्दी बोलचालके अनुप्रास ही इसमें संग्रह नहीं किये हैं वरन् इबारत लिखनेमें भी अनुप्रासका अपूर्व आवेश उत्पन्न किया है जैसे आप भूमिकामें लिखते हैं कि "उन्हींकी प्रेम

तो वे वस्तुएँ काफ़ी सस्ती मिल सकती हैं और उन्हें बाज़ार-भाव से गाँवों में बेंचकर उसके मुनाफ़े से पंचायतों की मदद कुछ न कुछ मात्रा में की जा सकती है। कुछ प्रान्तीय सरकारों ने इस तत्व पर कार्य आरम्भ किया है, परन्तु उसे अधिक व्यापक बनाने की ज़रूरत है।

अन्य ज़रिए

इसके अलावा बहुत-सी छोटी-मोटी मदें हैं जिनसे पंचायतें आमदनी कर सकती हैं। गाँवों में बाहर से आनेवाले और गाँवों से बाहर जानेवाले माल पर वे चुंगी बैठा सकती हैं। इससे दोहरा लाभ होगा। एक तो बाहर से चीजें लाकर व्यवहार करने की आदत कम होगी तथा गाँव का पैसा बाहर नहीं जाएगा; दूसरे पंचायतों को भी आमदनी हो जाया करेगी। विदेशी माल, जैसे जापानी खिलौने आदि, पर, जिनके द्वारा बहुत अधिक पैसा बाहर जाता है, वे ज्यादा कर बैठा सकती हैं। इसी प्रकार बाज़ारों, दलाली इत्यादि, से भी वे आमदनी कर सकती हैं। युक्तप्रान्त वग़ैरह में ये अधिकार अधिकांश ज़मींदारों को प्राप्त हैं; किन्तु वे यदि पंचायतों को दिए जाएँ तो सार्वजनिक काम अधिक होगा। सरकारी पेड़ों, चरागाहों, आदि, का प्रबंध और उपयोग पंचायतों को देने से भी उनकी आमदनी बढ़ सकती है।

इसके अलावा डिस्ट्रिक्टबोर्ड, लोकलबोर्ड, आदि, सड़कों इत्यादि की जो मरम्मत करवाते हैं या जो नई इमारतें बनवाते

हैं उनका ठेका यदि उनसे संबंध रखनेवाली गाँव की पंचायत ही को दिया जाए तो पंचायतों की आमदनी की वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार की मदद करने में बोर्डों को भी कोई एतराज़ नहीं हो सकता और इनका काम भी अधिक अच्छी तरह होगा ; क्योंकि गाँववालों का ध्यान केवल पैसा बचाने ही की ओर न होगा, बल्कि वे यह भी ध्यान रक्खेंगे कि उनके गाँव की सड़क या उनके गाँव की इमारत अच्छी बने, मज़बूत बने। गाँव-गाँव में आपस में होड़-सी लग जाएगी कि किसका काम अधिक अच्छा होता है और इस प्रकार दोनों लाभ उठाएँगे। इस प्रकार अधिकार प्राप्त करके और आर्थिक परिस्थिति सुधारने के बाद जब ये पंचायतें सुधार-कार्य में लगेंगी तब हमारे गाँव संपन्न और हरे-भरे होंगे और तभी हम सच्चे स्वराज्य की ओर क़दम बढ़ाएँगे।

